१३. स्वतंत्रता युद्ध की परिपूर्ति

भारत स्वतंत्र हुआ । फिर भी स्वतंत्रता युद्ध अभी भी समाप्त नहीं हुआ था । भारत में अनेक रियासतें, राजे-रजवाड़े थे । उन्हें भारत में सम्मिलित होने अथवा स्वतंत्र रहने का अधिकार प्राप्त हुआ था । परिणामतः एकीकृत भारत का राष्ट्रीय कांग्रेस का स्वप्न अधूरा रह गया था । रियासतों के स्वतंत्र रहने से भारत के खंड-खंड होने की संभावना थी । भारत के कुछ क्षेत्रों और हिस्सों पर पुर्तगालियों और फ्रांसीसियों की सत्ता बनी हुई थी और उन्होंने अपनी सत्ता छोड़ी नहीं थी परंतु भारत ने दृढ़तापूर्वक ये समस्याएँ हल कीं । इसकी जानकारी हम इस पाठ में प्राप्त करेंगे ।

भारतीय रियासतों का विलय : भारत में छोटी-बड़ी मिलाकर छह सौ से अधिक रियासतें थीं । असहयोग आंदोलन के प्रभाव स्वरूप रियासतों में राजनीतिक जागृति उत्पन्न होना प्रारंभ हो गया था ।

सरदार वल्लभभाई पटेल

रियासतों में प्रजा मंडलों की स्थापना होने लगी थी । विभिन्न रियासतों की प्रजा के हितों और उन्हें राजनीतिक अधिकार प्राप्त कराने के लिए कार्य करने वाले जनसंगठन थे । उन्हें प्रजा मंडल कहते थे । १९२७ ई. में ऐसे प्रजा मंडलों को मिलाकर एक अखिल भारतीय प्रजा परिषद की स्थापना की गई । फलस्वरूप रियासतों में प्रारंभ हो चुके आंदोलन को प्रेरणा मिली । भारत स्वतंत्र होने के पश्चात इन रियासतों के विलयीकरण की समस्या हल करने का दायित्व भारत के तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल को सौंपा गया और उन्होंने इस समस्या का हल बड़े कूटनीतिक ढंग से निकाला । उन्होंने रियासतदारों को विश्वास दिलाकर सभी को स्वीकार होगा; ऐसा 'विलयपत्र' तैयार किया ।

भारत में विलीन होना रियासतदारों के हित में किस प्रकार है; यह सरदार पटेल ने रियासतदारों को समझाया । उनके इस आवाहन को रियासतदारों ने बहुत अच्छा प्रतिसाद दिया । जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर रियासतों को छोड़कर अन्य रियासतें भारत में विलीन हुईं । रियासतों के विलय की समस्या को हल करने के लिए सरदार पटेल ने दृढ़ भूमिका अपनाई ।

जूनागढ़ का तक्नय : जूनागढ़ सौराष्ट्र की एक रियासत थी । वहाँ की प्रजा भारत में सम्मिलित होना चाहती थी लेकिन जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान में सम्मिलित होने की सोच रहा था । उसके इस निर्णय का वहाँ की प्रजा ने कड़ा विरोध किया । तब नवाब पाकिस्तान चला गया । इसके पश्चात १९४८ फरवरी ई. में जूनागढ़ का भारत में विलय हुआ ।

हैदराबाद मुक्ति संग्राम : हैदराबाद भारत में सब से बड़ी रियासत थी । इसमें तेलुगु, कन्नड़ और मराठी भाषी प्रांत थे । यहाँ निजाम का एकछत्र शासन था । रियासत में नागरिक और राजनीतिक अधिकारों का अभाव था । हैदराबाद रियासत की जनता ने तेलंगाना क्षेत्र में आंध्र परिषद, मराठवाड़ा क्षेत्र में महाराष्ट्र परिषद और कर्नाटक क्षेत्र में कर्नाटक परिषद की स्थापना की । स्वामी रामानंद तीर्थ ने १९३८ ई. में हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की स्थापना की ।

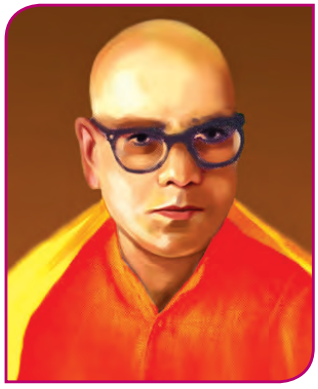

स्वामी रामानंद तीर्थ

निजाम ने इस संगठन पर प्रतिबंध लगाया । हैदराबाद स्टेट कांग्रेस को मान्यता दिलवाने और लोकतांत्रिक अधिकार प्राप्त करने के लिए संग्राम प्रारंभ हुआ । इस संग्राम का नेतृत्व जुझारू सेनानी स्वामी रामानंद तीर्थ ने किया । उन्हें नारायण रेड्डी,

सिराज-उल्-हसन तिरमिजी का सहयोग प्राप्त हुआ । पी.वी.नरसिंहराव और गोविंदभाई श्रॉफ स्वामी जी के निष्ठावान अनुयायी थे ।

जुलाई १९४७ ई. में हैदराबाद स्टेट कांग्रेस ने प्रस्ताव पारित किया कि हैदराबाद रियासत का भारत में विलय किया जाए, परंतु निजाम ने भारत विरोधी नीति अपनाई । उसने हैदराबाद रियासत को पाकिस्तान में विलीन करने की दृष्टि से गतिविधियाँ प्रारंभ की । कासिम रजवी निजाम का सहयोगी था । रियासत को भारत में विलीन करने की माँग को दबाने के लिए उसने 'रजाकार' नाम का संगठन स्थापित किया । कासिम रजवी और उसके साथियों ने न केवल हिंदुओं पर ही अपितु लोकतांत्रिक आंदोलन का समर्थन करने वाले मुस्लिमों पर भी अत्याचार किए । फलस्वरूप सभी ओर लोकमत धधकने लगा । भारत सरकार निजाम के साथ समझदारी के साथ बातचीत करने का प्रयास कर रही थी परंतु निजाम मान नहीं रहा था । अंततः भारत सरकार ने १३ सितंबर १९४८ ई. को निजाम के विरुद्ध पुलिस कार्यवाही प्रारंभ की । इसका सांकेतिक नाम 'ऑपरेशन पोलो' था । अंत में १७ सितंबर १९४८ ई. को निजाम ने आत्मसमर्पण किया। हैदराबाद रियासत का भारत में विलय हुआ । रियासत की प्रजा का यह संग्राम सफल हुआ । इस संग्राम में आर्य समाज का विशेष योगदान रहा ।

हैदराबाद मु ाम मराठवाड़ा का योगदान : इस संग्राम में स्वामी रामानंद तीर्थ, बाबासाहेब परांजपे, गोविंदभाई श्रॉफ, अनंत भालेराव, आशाताई वाघमारे, माणिकचंद पहाडे आदि ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ।

'वंदे मातरम्' आंदोलन द्वारा विद्यार्थी हैदराबाद मुक्ति संग्राम में सहभागी हुए । इसी तरह; हैदराबाद मुक्ति संग्राम में वेदप्रकाश, श्यामलाल, गोविंद पानसरे, बहिर्जी शिंदे, श्रीधर वर्तक, जनार्दन मामा, शोएब-उल्ला-खाँ आदि ने अपने प्राणों का बलिदान दिया । उनका बलिदान भारतीयों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध हुआ । इससे ध्यान में आता है कि हैदराबाद के मुक्ति संग्राम में मराठवाड़ा के नेताओं और सामान्य लोगों का असाधारण योगदान रहा ।

१७ सितंबर हैदराबाद मुक्ति संग्राम का विजय दिन है । इस दिन को मराठवाड़ा में 'मराठवाड़ा मुक्ति दिवस' के रूप में मनाया जाता है । १५ अगस्त १९४७ ई. को स्वतंत्र भारत में मराठवाड़ा का समावेश नहीं हुआ था । १९४८ ई. में हुए जनता के उत्स्फूर्त संग्राम के बाद इस क्षेत्र का स्वतंत्र भारत में विलय हुआ ।

कश्मीर समस्या : कश्मीर रियासत का नरेश हरि सिंह ने स्वतंत्र रहने का निश्चय किया था । पाकिस्तान चाहता था कि कश्मीर का पाकिस्तान में विलय हो । इसके लिए पाकिस्तान ने हरि सिंह पर दबाव लाना प्रारंभ किया । अक्तूबर १९४७ ई. को पाकिस्तान के उकसाने और भड़काने पर शस्त्रधारी घुसपैठियों ने कश्मीर पर आक्रमण किया । तब हरि सिंह ने भारत में विलय होने के विलयपत्र पर हस्ताक्षर किए । इस प्रकार भारत में विलीन होने के पश्चात भारतीय सेना को कश्मीर की रक्षा हेतु भेजा गया । सेना ने कश्मीर का विशाल क्षेत्र घुसपैठियों के हाथ से पुनः अपने अधिकार में कर लिया परंतु कुछ क्षेत्र पाकिस्तान के अधिकार में रह गया ।

सीसी उप व का लय : भारत स्वतंत्र होने के पश्चात भी चंद्रनगर, पुदुच्चेरी, कारिकल, माहे और यानम प्रदेशों पर फ्रांस का आधिपत्य था । उन प्रदेशों के भारतीय लोग भारत में सम्मिलित होने को उत्सुक थे । ये प्रदेश भारत के घटक थे । अतः वे भारत को सौंपे जाएँ; यह माँग भारत ने की ।

फ्रांस ने १९४९ ई. में चंद्रनगर में सार्वमत लिया । वहाँ की जनता ने भारत के पक्ष में सार्वमत दिया । चंद्रनगर भारत को सुपुर्द किया गया । इसके पश्चात फ्रांस ने भारत के अन्य प्रदेश भी भारत सरकार को सौंप दिए ।

गोआ मु : पुर्तगाल ने अपने अधिकार का प्रदेश भारत को सौंपने से इनकार कर दिया । उस प्रदेश को पाने के लिए भारतीयों को कड़ा संघर्ष करना पड़ा । इस संघर्ष में डॉ.टी.बी.कुन्हा अग्रसर थे । उन्होंने पुर्तगाली सरकार के विरुद्ध जनता में जागृति

डॉ. टी. बी. कुन्हा

निर्माण करने का कार्य किया । पुर्तगालियों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए उन्होंने गोआ कांग्रेस समिति की स्थापना की । आगे चलकर १९४५ ई. में डॉ.कुन्हा ने मुंबई में 'गोआ यूथ लीग' संगठन की स्थापना की । १९४६ ई. में वे गोआ गए और भाषणबंदी का आदेश तोड़ा । इसके लिए डॉ.कुन्हा को आठ वर्ष कारावास का दंड सुनाया गया । १९४६ ई. में ही डॉ.राममनोहर लोहिया ने गोआ मुक्ति के लिए सत्याग्रह प्रारंभ किया । उन्होंने प्रतिबंधात्मक आदेश ठुकराकर गोआ के मड़गाँव में भाषण किया । इसके लिए उन्हें पुर्तगाली सरकार ने गोआ की सीमा से पार कर दिया ।

इसी समय गुजरात के दादरा और नगर हवेली के पुर्तगाली उपनिवेश को मुक्त करने के लिए 'आजाद गोमंतक' दल स्थापित किया गया । २ अगस्त १९५४ ई. को इस दल के युवाओं ने सशस्त्र आक्रमण कर दादरा और नगर हवेली को पुर्तगाली सत्ता से मुक्त किया । इस आक्रमण में विश्वनाथ लवंदे, राजाभाऊ वाकणकर, सुधीर फड़के, नानासाहेब काजरेकर आदि ने हिस्सा लिया था ।

१९५४ ई. में गोआ मुक्ति समिति स्थापित की गई । इस समिति ने महाराष्ट्र से सत्याग्रहियों की अनेक टुकड़ियाँ गोआ में भेजीं । उनमें ना.ग.गोरे, सेनापति बापट, पीटर अल्वारिस, महादेव शास्त्री जोशी और उनकी पत्नी सुधाताई आदि का सहभाग था । मोहन रानडे गोआ मुक्ति आंदोलन के एक जुझारू नेता थे । पुर्तगाली सत्ता ने सत्याग्रहियों पर अनगिनत अन्याय और अत्याचार किए । परिणामतः भारत का जनमत अधिक क्षुब्ध हुआ ।

गोआ के स्वाधीनता युद्ध ने भयानक और उग्र स्वरूप धारण किया । भारत सरकार पुर्तगाली सरकार के साथ समझदारी और संयम से बातचीत कर रही थी परंतु पुर्तगाली सरकार मान नहीं रही थी । अंततः विवश होकर भारत सरकार ने सैनिकी बल का उपयोग करने का निर्णय किया । दिसंबर १९६१ ई. को भारतीय सेना ने गोआ में प्रवेश किया । शीघ्र ही पुर्तगाली सरकार ने आत्मसमर्पण कर दिया । १९ दिसंबर १९६१ ई. को गोआ पुर्तगालियों के आधिपत्य से मुक्त हुआ । भारत की भूमि से साम्राज्यवाद को जड़ से उखाड़कर फेंका गया । भारत के स्वतंत्रता युद्ध की सच्चे अर्थ में परिपूर्ति हुई ।

9CNX44

स्वाध्याय

१. दिए गए विकल्प से उचित विकल्प चुनकर कथन पुनः लिखो ।

(१) भारत में छोटी-बड़ी मिलाकर छह सौ से अधिक ..... ।

(अ) राज्य थे (ब) देहात थे

(क) रियासतें थीं (ड) शहर थे

(२) जूनागढ़, ... और कश्मीर रियासतों को छोड़कर अन्य रियासतें भारत में विलीन हुईं ।

(अ) औंध (ब) झाँसी (क) वड़ोदरा (ड) हैदराबाद

२. तुम्हें कारणसहित स्पष्ट करो ।

(१) जूनागढ़ का भारत में विलय हुआ ।

(२) भारत सरकार ने निजाम के विरुद्ध पुलिस कार्यवाही प्रारंभ की ।

(३) भारत में विलीन होने के विलयपत्र पर हरि सिंह ने हस्ताक्षर किए ।

३. तुम्हारे शब्दों में उत्तर लिखो ।

(१) रियासतों की विलय प्रक्रिया में सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान को स्पष्ट करो ।

(२) हैदराबाद मुक्ति संग्राम में स्वामी रामानंद तीर्थ के योगदान को स्पष्ट करो ।

'हैदराबाद मुक्ति संग्राम' विषय पर चित्र और जानकारी इकट्ठी करो । उसपर आधारित सारिणियों की प्रदर्शनी इतिहास की कक्षा में आयोजित करो ।